<u>विद्या भवन बालिका विद्यापीठ,</u>

<u>शक्ति उत्थान आश्रम , लखीसराय।</u>

<u>वर्ग अष्टम। विषय -हिन्दी</u>

<u>दिनांक-21-08-2021</u>

<u>विषय शिक्षिका- सरिता कुमारी</u>

पाठ- 9

दोहा एकादश (कबीर)

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप।।"

भावार्थ-- इस नाशवान और तरह-तरह की बुराइयों से भरे संसार में सच बोलना सब से बड़ी और सहज-सरल तपस्या हैं। सत्य बोलने, सच्चा व्यवहार करने और सत्य मार्ग पर चलने से बढ़ कर और कोई तपस्या है, न हो ही सकती है। इसके विपरीत जिसे पाप कहा जाता है या जो अनेक प्रकार के पाप-कर्म माने गए हैं; बात-बात पर झूठ बोलते रहना; छल-कपट और झूठ से भरा व्यवहार तथा आचरण करना उन सभी से बड़ा पाप है। जिस किसी व्यक्ति के हृदय में सत्य का वास होता है अर्थात् जिस का आचरण एवं व्यवहार सब तरह से सत्य पर ही आधारित रहा करता है, ईश्वर स्वयं उसके हृदय में निवास किया करते हैं। अर्थात् सत्य व्यवहार करने वाले व्यक्ति पर सब तरह से ईश्वर की दयादष्टि एवं कृपा बनी रहा करती है।

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि, हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

भावार्थ: यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इसलिए वह ह्रदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है।

अति का भला न बरसना अति की भली न धूप।

अति का भला न बोलना अति की भली नाच चूप।।

भावार्थ- ना तो ज्यादा बोलना अच्छा है और ना ही ज्यादा चुप रहना अच्छा है। अत्यधिक वर्षा भी बहुत अच्छी नहीं होती है और अत्यधिक धूप भी अच्छा नहीं होता है।